IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आदी लोकगीतों में जनजातीय ज्ञान संपदा और भारतबोध

प्रस्तुतकर्ता

मुमयिंग मोयोंग

अतिथि संकाय

वांग्चा राजकुमार सरकारी महाविद्यालय, देवमाली, अरुणाचल प्रदेश

भारतीय ज्ञान परम्परा की दृष्टि से देखें, तो यह परंपरा सदियों से विशिष्ट मूल्यों तथा प्रवृत्तियों के रूप में प्रवाहित करती चली आ रही है। भारतीय ज्ञान परम्परा का इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन समय से ही यह विशिष्ट ज्ञान की ज्योति से भारतीय समाज का पथ आलोकित करता आया है। भारतीय ज्ञान परम्परा आज भी जीवन मूल्यों की बुनियाद पर अपनी श्रेष्टता को कायम रखे हुए है। समाज की हर पीढी इससे प्रेरणा लिए जीवन मार्ग में आगे बढ़ रही है। यह अद्वितीय ज्ञान से निर्मित है जिनमें ज्ञान-विज्ञान, लौकिक-अलौकिक, कर्म-धर्म, योग-साधना, त्याग-बलिदान इत्यादि भाव समाहित है। ये भाव भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना का निर्माण करती है। यह लोक में लोकमंगल की भावना को सिद्ध करती है। प्राचीन समय से ही भारतीय शिक्षा प्रणाली ने भारतीय ज्ञान परम्परा को समृद्ध किया है। इसने जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केन्द्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों को स्थापित किया हैं जिसने मानवीय चेतना को विकसित करने में सहायता की है।

यह भारतभूमि महान है। ऐतिहासिक साक्ष्यों ने यह सिद्ध किया है कि भारतभूमि ने ही सर्वप्रथम ज्ञान की अविरल धारा को प्रवाहित किया, जिसने सम्पूर्ण जगत को ज्ञान के आलोक से सींचा है। हमारे पूर्वजों ने इस विशाल ज्ञान परम्परा को संजोए रखा तथा अगली पीढ़ी के मार्ग दर्शन के लिए उसे प्रवाहित करती रही है। इसी भारतीय ज्ञान परम्परा को समृद्ध करने में भारतीय जाति-जनजातियों ने अपनी-अपनी सांस्कृतिक विरासतों के आधार पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। इस दृष्टि से भारत के सुदूर पूर्वोत्तर प्रदेश अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजाति 'आदी' समुदाय की प्रमुख भूमिका रही है। आदी समुदाय अपनी प्रचलित लोकगीतों के माध्यम से व्यवहारिक ज्ञान, जीवन मूल्यों एवं मान्यताओं को संजोए हुए हैं। लोकगीत लोकजीवन की वास्तविक भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करता है। यह जनसामान्य की जीवनानुभूतियों को गीत के रूप में अर्थात् मौखिक रूप में प्रकट करता है। आदी लोकगीतों के माध्यम से आदी समाज अपनी सांस्कृतिक संपदा और बौद्धिक परम्परा को जीवित रखे हुए हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा को समृद्ध करने के क्रम में आदी समुदाय अपनी बौद्धिक संपदा के रूप में अपने लोक विशवास, लोक मान्यताओं और परम्पराओं को विशेष महत्त्व देते हैं। ये लोक विश्वास, मान्यताएँ एवं परम्पराएँ आदी समाज के उत्सव-पर्व, जन्म-मृत्यु संस्कार तथा अन्य सामूहिक एवं पारिवारिक कार्यक्रमों में सपष्ट रूप में देखने को मिलता है। आदी समाज में उत्सव-त्यौहारों का आयोजन विशेष रूप से प्रकृति से जुड़ी होती है। वे प्रकृति के हर एक कण की उपासना करते हैं। क्योंकि उनका विश्वास है कि उनकी हर जरूरतों की पूर्ति प्रकृति की देवी 'कीने नाने' द्वारा ही होती है। अच्छी फसल की पैदावार के लिए प्रकृति की उपासना किया जाता है। इस तरह की उपासना पद्धति भारतीय ज्ञान परंपरा के तहत अन्य जाति-जनजातियों में भी देखने को मिलती है।

आदी लोकगीतों के कई प्रयोजन देखने को मिलते हैं जैसे फसल की समृद्धि कैसे लाई जा सकती है, नैतिक कार्य करना ही जीवन का लक्ष्य क्यों है, रोग से कैसे छुटकारा पा सकते है, विपदाओं को दूर करने के ज्ञान भी आदि भी लोकगीतों में उपलब्ध मिलते है। अत: यह सारी ज्ञान संपदा मुख्य रूप से उनके पूर्वजों द्वारा संचित ज्ञान शक्ति एवं प्रकृति प्रदत्त अनुभवों द्वारा ही संभव हो पाया है। यह ज्ञान उन तक पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होकर पहुँचा है और आज उनके लिए मुख्य धरोहर है।

प्रत्येक समाज की अपनी-अपनी ग्राम सभाएँ होती है, जिसमें उस समाज के विधि-विधान संबंधी मान्यताएँ निहित होती है। भारतीय ग्राम समाज में 'पंचायत' की व्यवस्था होती है किन्तु आदी समाज में पंचायत के स्थान पर 'कबाङ' शब्द प्रचलित है। आदी समाज में पारंपरिक न्याय व्यवस्था कबाङ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में मौखिक रूप में कई मान्यताएं प्रचलित है। इन मान्यताओं के अनुसार कोरी (छोटी गिलहरी) को कबाङ का प्रतिनिधि के रूप में चुना गया। लेकिन कोरी को 'कीने नाने' की देवी को पसंद नहीं आया। फिर से कबाङ का आयोजन किया गया और 'बूङको' (जंगली चूहा) को प्रतिनिधि चुना। कीने नाने देवी के पास जाकर उन्हें प्रभावित किया तथा देवी ने मुफ़्त में बीज देने का आश्वासन दिया। कई दिनों तक बीज नहीं भेजने के कारण पुन: एक बार कबांग का आयोजन कर समस्या पर चर्चा करते हुए सानयी (कुता) को प्रतिनिधि बनाया गया। सानयी के आत्मविश्वासी बातों से प्रसन्न होकर कीने नाने देवी ने फसलों के लिए बीज भेजी। जिसे आदी लोकगीतों में इस प्रकार प्रकट किया गया है-

सीकिङ कोजे नाने दे

अङो कारसाङ अ सानयी मअ

आमली तकबाङ अम बालिक तोकू

रुली तकबाङ अम बालिक तोकू

अर्थात् कीने नाने देवी ने सानयी के कानों में फसलों की बीज को सजाया तथा सानयी को मानव जाति के लिए बीज देकर धरती पर भेजा। इस प्रकार धरती में खाद्य पदार्थों का आगमन हुआ। अत: इस गीत के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार सामजिक, आर्थिक समस्याओं पर चर्चा करने और समाधान के लिए प्राचीन समय से ही आदी समाज में कबाङ का आयोजन होता आया है।

भारतीय परम्परा में प्राचीन काल से ही रक्षा धागा बांधने की मान्यता और विश्वास प्रचलित है। लोक विश्वास के अनुसार रक्षा धागा कष्टों को दूर करने के साथ-साथ नकारात्मक शक्तियों के प्रभाव से भी छुटकारा दिलाता है। आदी समाज की मान्यता के अनुसार 'रिदिन' (रक्षा धागा) व्यक्ति को मुसीबतों से बचाता है और दुष्ट आत्माएँ भी इस धागे के प्रभाव से डरती है। वर्त्तमान समय में भी आदी समाज में रिदिन का महत्त्व ज्यों का त्यों देखने को मिलता है। आदी लोकगीतों में रिदिन का महत्त्व इस प्रकार उजागर हुआ है-

सीकिङ ताब ताकाम बूलू

रिनदो लजीनम लाङका

रीनया लाकजीनम जिनलिक लाङका अमला

कीनम रामनाम ताकाम अम आईलाङकूका

इस गीत से तात्पर्य है कि आदी समाज में रक्षा धागा 'रिदिन' पर अटूट विश्वास है। रिदिन को पुरखों के समय से ही बुरी आत्माओं के खिलाफ जीवन रक्षक के रूप में बांधा जाता है। रिदिन को बीमार व्यक्ति की कलाई में इस आशा के साथ बांधा जाता है कि यह बुरी आत्माओं से उस व्यक्ति की रक्षा करें और उसकी पीड़ा को शांत करें।

आदी समाज प्रकृति के उपादानों की उपासना बड़े ही श्रद्धा के साथ करता है। आदी समाज में पुरखों के समय से ही 'दोन्यी-पोलो' को पूजते आये हैं। 'दोन्यी' आर्थात् सूर्य, जिसे आदी समुदाय में माता का स्वरूप माना गया है तथा 'पोलो' अर्थात् चंद्रमा को 'पिता' के रूप में पूजते हैं। आदी लोकविश्वास के अनुसार दोन्यी-पोलो सर्वशक्तिमान है तथा आध्यात्मिकता से जुड़ा है।

तातकि–तातकि तोल दोन्यी–पोलो: कूमनाम ङलुक आगोम

कूमनाम ङलुक आगोम लारिक सितोई, दोन्यी-पोलो नो

इस गीत के माध्यम से यह कहा गया है कि दोन्यी-पोलो आप हमारी प्राथनाओं को स्वीकार कीजिए। हम आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। हमारे जीवन में जो भी ऊर्जा है वह आपके स्नेह की वजह से ही मिला है। हमारी यह आँखे, जिससे हम संसार को देखते हैं तथा जीवन यापन के लिए जितने भी सुविधाएँ हमें मिल रहा है सब आपकी कृपा से प्राप्त हुआ है। प्राकृतिक आपदाओं से आप हमारी रक्षा करते हैं।

भारतीय समाज में जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न प्रकार के संस्कार पुरातन समय से ही देखने को मिलता है। विभिन्न जाति एवं जनजातियाँ अपनी-अपनी सासंकृतिक परम्पराओं का अनुसरण करते हुए इन संस्कारओं का पालन करता है। भारतीय समाज में बच्चे के जन्म संस्कार को लेकर सभी जातियों और जनजातियों की अपनी-अपनी मान्यताएं हैं। अरुणाचल प्रदेश के आदी समुदाय में नवजात (बच्चे) के जन्म संस्कार की अपनी मान्यता रही है। लोक मान्यता के अनुसार बच्चे के जन्म के तुरंत बाद ही बच्चे का नामकरण किए जाने की प्रथा है। क्योंकि नामकरण में देरी होने पर बुरी आत्माएँ (नकारात्मक शक्तियाँ) उसे मारकर अपना बना लेगी। बच्चे के जन्म के बाद नीलूम और अराङ आबो का अनुष्ठान करते हुए, सामूहिक भोग का आयोजन किया जाता है। जहाँ सम्बन्धियों और गाँववालों को खिलाकर माता-पिता तथा समूचा परिवार खुशियाँ मनाते हैं। इस अनुष्ठान में 'ओबो-आरान' नाम से आदी लोकगीत गाकर जन्म संस्कार मनाया जाता है-

सीलोके दादी लीङअम इमोको

गोकदुम सूला ओलो ङीलूमा लूमनामसी

तुमीरिने मोलाङ प लोतमो लोकने मोलापे

सीजीङआ मोलापे

यह गीत मुख्य रूप से परिवार में बच्चे के जन्म की ख़ुशी को बयान करने के उद्देश्य से गाया जाता है और बच्चे के जीवन की मंगलकामना की जाती है। उनके ईश्वर दोन्यी-पोलो बच्चे को अच्छी सेहत प्रदान करें, जीवन में मार्गदर्शन प्रदान करें और बड़ा होकर एक जिम्मेदार व्यक्ति बनें तथा परिवार और समाज के हित के लिए कार्य करें। ये सारी बातें उदात्त भावनाओं से प्रेरित हैं जिस बारे में भारतीय ऋत-व्यवस्था एवं ज्ञान परंपरा में ढेरों बातें देखी जा सकती हैं।

भारतीय परम्परा के अनुसार समाज में लोरी गाकर रोते हुए बच्चों को चुप करना और उन्हें सुलाना अनादि काल से चली आ रही है। गाँव में दादी-नानी विशेष रूप से बच्चों को लोरियां सुनाती है। यह परम्परा आदी समाज में भी प्रचलित है। आदी समाज में बच्चों को सुनाये जाने वाली लोरी को 'योयो गागा' कहते हैं।

ओ योयो लो ओ पयो लो ओइ

ओ योयो गागा ओ पयो गागा ओइ

मीमी लामकुअ कलूसो, मीमी गोपअ तपात अ बंगाफ लाङका

मीमी गोरदुङ अ कतूसो, मीमी गोपअ तायूपअ बूझूक लाङका

अर्थात् बड़ी बहन अपने भाई को पीट पर लादकर उसे पुचकारते हुए चुप कराती है, और योयो गागा गाकर सुनाती है। कहती है मेरे प्यारे भाई आप मत रोओ, चुप हो जाओ, आप सो जाओ। आपको मैंने बड़े प्यार से अपनी पीठ पर लादकर लोरी सुना रही हूँ। इस लोकगीत में बड़ी बहन का अपने छोटे भाई के प्रति ममता और स्नेह की भावना प्रकट हुई है।

आदी लोकगीतों में नैतिक ज्ञान का समावेश प्रचुर मात्र में हुआ है। लोकगीतों की अपनी मधुरता होती है, जिस कारण इन गीतों के माध्यम से प्रकट होने वाला ज्ञान कठोर और नीरस नहीं लगते हैं। फलत: लोगों को आसानी से समझ में आ जाते हैं।

ओ मीलो को मीलो ओ यायी क ओ रालिङ सित: ओ ततुङल

ओ तमिन गमो प ओई

ओ मिमे को मीलो को मामीक ओ रिकबीलो

ओ आयाङ ओ ओई ओ मेनापे ओई इबमोतो ओई

प्रस्तुत लोकगीत में बड़ी बहन अपने छोटे भाई-बहनों को नैतिकता का ज्ञान देते हुए कहती है मेरे प्यारे भाई-बहन...!! तुम बड़े होकर नेक इंसान बनना। जिस प्रकार हमारे माता-पिता हमें पालने के लिए दिन-रात मेहनत करते है, जिस प्रकार हमारे पिता खेतों में परिश्रम करते है और माता बुवाई-रोपाई में उनकी सहायता करते हैं, तुम भी बड़े होकर उन्हीं की तरह परिश्रम करना।

निष्कर्ष:

अरुणाचल प्रदेश का आदी समुदाय अपनी लोक मान्यताओं-विश्वासों और लोक परम्पराओं का वहन कर अपनी सास्कृतिक विरासत को कायम रखे हुई हैं। लोकगीतों के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसका प्रवाह मौखिक रूप से होता आया है। लोकगीतों के माध्यम से ही आदी समाज की बौद्धिक एवं नैतिक संपदा आज भी जीवित है जिसमें प्रकृति के प्रति प्रेम, उसकी उपासना करना, उनके प्रति आभार व्यक्त करना इत्यादि शामिल है। जन्म-मृत्यु संस्कार, नामकरण, बच्चों को लोरी गाकर सुनाने की परम्परा अधिक प्रचलित है। खेती-बारी, फसल उगाने-काटने, कृषि से जुड़े पर्व से संबंधित लोकगीत आदी समुदाय के कृषि प्रिय होने तथा उनके परिश्रम को उजागर करती है। नैतिक ज्ञान से आदी समुदाय के लोकगीत परिपूर्ण है, जो लोक में नैतिक जीवन की शिक्षा देती है। लोकगीतों के माध्यम से ही आदी समुदाय की जनजातीय ज्ञान संपदा विकसित हुई है। विशाल भारतीय ज्ञान संपदा की तरह ही आदी समुदाय की जनजातीय ज्ञान संपदा विकसित और पल्लवित हो रही है तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के समृद्धि में अपना योगदान दे रही है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. डॉ. शम्भूशरण शर्मा, लोक साहित्य
2. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य कि भूमिका
3. डॉ. विद्या चौहान, लोक साहित्य की सांस्कृतिक पृष्टभूमि
4. तामो मिबांग आदी दोयिंग
5. पोपोक मेकिर, पोपोक्स लूमान आबंग
6. प्रो. वसंत शिंदे, भारतीय ज्ञान परम्परा